PTEC

# Monthly NEWS LETTER

Volume 2 September, 2025 Issue 5

## शिक्षकों को नमन: ज्ञान के प्रकाशस्तंभ और जीवन के शिल्पकार

शिक्षक दिवस यह केवल एक पर्व नहीं, बल्कि उन महान आत्माओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का दिन है जो हमारे जीवन को आकार देते हैं। यह चित्र शिक्षकों की उस अटूट एकजुटता और समर्पित भावना का प्रतीक है, जो हमारे समाज की नींव है।

एक शिक्षक की भूमिका मात्र पुस्तकें पढ़ाना नहीं है; यह जीवन को गढ़ना है, विचारों को प्रज्ज्वलित करना है और भविष्य की दिशा तय करना है। शिक्षक उस जलती हुई मोमबत्ती के समान हैं जो स्वयं जलकर दूसरों के जीवन में ज्ञान का प्रकाश फैलाते हैं। उनका त्याग अतुलनीय है। वे अपने छात्रों के उज्जवल भविष्य के लिए अपनी नींद, अपना आराम और अपना समय सहर्ष न्योछावर कर देते हैं।

जैसे एक कुम्हार मिट्टी को आकार देकर सुंदर घड़ा बनाता है, वैसे ही शिक्षक बच्चों के कच्चे जीवन को अपने ज्ञान और अनुभव से संवारते हैं। वे धैर्य और प्रेम से हर छात्र की विशिष्टताओं को पहचानते हैं और उन्हें उनकी पूरी क्षमता तक पहुँचने में मदद करते हैं। उनकी शिक्षाएँ केवल अकादमिक नहीं होतीं, बल्कि वे नैतिक मूल्यों, जीवन कौशलों और मानवीय संवेदनाओं का भी संचार करती हैं।

हमारे पूर्वजों ने ठीक ही कहा है कि "गुरु गुड़ ही रह जाता है और चेला चीनी बन जाता है।" यह कथन शिक्षकों की निस्वार्थ भावना का उत्कृष्ट उदाहरण है। एक शिक्षक अपने छात्र की सफलता में ही अपनी सबसे बड़ी सफलता देखता है। वे चाहते हैं कि उनके छात्र उनसे भी आगे बढ़ें, उनसे भी अधिक ऊँचाइयों को छूएँ। यह भावना ही उन्हें अद्वितीय बनाती है।

शिक्षक केवल एक पेशा नहीं, बल्कि एक महत्वपूर्ण तपस्या है। यह समाज को बदलने और एक बेहतर भविष्य का निर्माण करने का सबसे शक्तिशाली माध्यम है। वे हमें केवल तथ्य नहीं सिखाते, बल्कि हमें सोचना, प्रश्न पूछना और अपनी दुनिया को समझना सिखाते हैं।

आइए, हम सब मिलकर अपने शिक्षकों के प्रति सम्मान और कृतज्ञता व्यक्त करें। उनकी निस्वार्थ सेवा, उनके त्याग और उनके अटूट समर्पण को सलाम करें। वे ही हमारे समाज के सच्चे शिल्पकार और ज्ञान के प्रकाशस्तंभ हैं।

शिक्षक दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ!

संपादक मंडल

## Microteaching Experience

To become a teacher is not enough — one has to be a *good teacher* with passion, honesty, responsibility, and time management. Microteaching gave us the opportunity to practice these qualities. Through this practice, I not only learned teaching skills but also developed confidence, creativity, and enthusiasm for teaching.

In the process of microteaching, I became more aware of *how to teach* and *what to teach*. I learned to present lessons in a simple and easy manner, which will be very helpful in preparing effective lesson plans in the future. Microteaching made me proud of my ability to teach a topic in an interesting and meaningful way.

I also observed my fellow trainees and mentors, which was a valuable learning experience. Our mentor (No. 4) Sir Niraj guided us with patience and encouragement. Whatever shortcomings we had in our attitude or practice were corrected in a supportive and positive environment.

Overall, microteaching was a wonderful and enriching experience for me. It helped me improve my teaching style, boosted my confidence, and inspired me to work towards becoming an ideal teacher.

**Neeraj Panna**
1st Year 'A'

## सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास का अनुभव

सूक्ष्म शिक्षण का नाम सुनते ही मेरे मन में जिज्ञासा और उत्सुकता का संचार हुआ। जब इसकी शुरुआत हुई तो मन में भय भी था और शरीर काँप-सा रहा था। लेकिन धीरे-धीरे इसने मुझे आत्मविश्वास से भर दिया। यह अनुभव मेरे लिए एक खूबसूरत अवसर था, मानो मेरे भविष्य का एक अनमोल तोहफ़ा।

जिस ज्ञान से मैं अब तक अनजान थी, उसी ने मुझे मेरी पहचान दिलाई। सूक्ष्म शिक्षण ने मेरी क्षमताओं को निखारने का अवसर दिया। जो कमियाँ मुझमें छिपी थीं, उन्हें सुधारकर यह अभ्यास मुझे और परिपूर्ण बना गया।

अब मेरे भीतर एक आदर्श शिक्षिका बनने का सपना और भी सशक्त हो गया है। मेरा संकल्प है कि मैं ऐसा कार्य करूँ जिससे किसी का भविष्य संवर सके और मुझे सदा मान-सम्मान मिलता रहे।

निधि खलखो
प्रथम वर्ष 'ब'

## शिक्षण अभ्यास

18 अगस्त से लेकर सितम्बर तक का समय मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण रहा। सूक्ष्म अभ्यास से पहले ही शिक्षण अभ्यास शुरू हो गया था। जिन दिनों का इंतजार था, वे दिन अंततः आ ही गए। शिक्षण अभ्यास बड़े ही उत्साहपूर्ण और अर्थपूर्ण तरीके से सम्पन्न हुआ।

प्राथमिक विद्यालय के प्रशिक्षणार्थियों को बच्चे समझकर उनसे जुड़ना, उन्हें पढ़ाना और उनके साथ समय बिताना मेरे लिए बेहद आनंददायक अनुभव रहा। उनकी मुस्कान और उनकी सीखने की उत्सुकता ने मुझे भी प्रेरित किया। इस दौरान मुझे न केवल शिक्षण का अनुभव प्राप्त हुआ, बल्कि स्वयं को भी एक नए दृष्टिकोण से समझने का अवसर मिला।

मुझे यह महसूस हुआ कि शिक्षण अभ्यास केवल एक अभ्यास नहीं है, बल्कि यह हमारे भविष्य को गढ़ने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। बच्चों के साथ समय बिताकर और उन्हें पढ़ाकर मुझे बहुत खुशी और आत्मसंतोष मिला। मैंने पूरी लगन और मन लगाकर शिक्षण अभ्यास किया, और प्रतिदिन कुछ नया सीखने को मिला।

यह अनुभव मेरे व्यक्तित्व और भविष्य के कैरियर दोनों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा।

अंकिता मिंज
प्रथम वर्ष 'अ'

## Back Bench to Black Board

Participating in the micro-teaching sessions with my mentor group was an eye-opening and valuable experience. It provided me with a safe, enriching, and transformative environment for learning. These sessions played a crucial role in helping me overcome my initial challenges as a teacher and in building my self-confidence. One of the most important skills I gained was the ability to prepare lesson plans and teaching materials within a short period of time. This significantly improved my planning and time-management abilities. The constructive suggestions and feedback I received from my mentor and peers were incredibly helpful in identifying my strengths and areas that needed improvement. The support I received was not limited to my mentor group alone. Many others also guided and encouraged me, which added to the collaborative and supportive environment of the training. Through these experiences, I learned how to manage classrooms effectively and handle a variety of teaching situations with confidence and adaptability.Furthermore, I had the valuable opportunity to apply my learning during the Teacher's Training Practice Middle School, Sitagarha, Hazaribagh. This real-world experience bridged the gap between theory and practice, enhancing my understanding of student behaviour, instructional strategies, and the responsibilities of a teacher.

Overall, the micro-teaching sessions were a crucial step in my journey of becoming a teacher. They equipped me with practical skills, boosted my self-belief, and prepared me to face future challenges with confidence.

Atul Vivek Ekka
First Year, 'B'

## अनुभव : सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास का

सुनते ही सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास का नाम.
आता था मन में मेरे ख्याल,
वह है बड़ा - सा भूत।
जाने को उसके सामने लगता था डर बड़ा।
18 अगस्त से 2 सितम्बर के वे दिन,
थे मेरे लिए बड़े ही खास।
सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास के पहले ही हो गया
मेरे पैर का प्लास्तर, चलने में थी परेशानी।
डर और जिज्ञासा के साथ किया मैंने शुरु इसे
धीरे- धीरे करके दूर किया गया मेरी कमजोरियों को,
बढ़ाया गया हौसला मेरा, बढ़ा आत्मविश्वास मेरा ।
मिला मुझे वहाँ सभों का साथ,
पायी मैं खुद को पहचान।
अब लगा मुझे बिना अभ्यास के
आदर्श शिक्षिका बनना है मुश्किल।
मिला मुझे अवसर, अभ्यास मध्य विद्यालय में जाने का,
देखकर वहाँ नन्हें-नन्हें बच्चों को दिल हो गया खुश
कभी पढ़ाते थे सहपाठियों को बच्चे समझ कर,
आज सचमुच के बच्चे थे सामने मेरे
जिज्ञासा देख उनकी, आया मुझे पढ़ाने में बहुत आनन्द
ये जो है कुछ दिनों के हसीन पल,
जीवन में मेरे हमेशा रहेंगे याद !

अनुभा टोप्पो
प्रथम वर्ष 'अ'

## The Micro Teaching Experience

The micro teaching experience was a golden opportunity for me. I really enjoyed it and felt very glad because I learned a lot from it. Through this process, I discovered some of my hidden talents and realized my potential as a teacher.

Micro teaching has helped me to develop my confidence and improve my ability to express my thoughts, feelings, and knowledge more clearly. It has widened my understanding of teaching and shown me how important it is to be caring, loving, and dedicated as a teacher.

Getting the chance to teach in front of others was a very precious opportunity. It allowed me to handle students at their own level of understanding and guided me in becoming a better teacher. This experience has motivated me to give my best in teaching and shaped my vision of becoming a teacher who can inspire and uplift students.

Mamta Tete
First Year 'B'

### सूक्ष्म शिक्षण अनुभव

सूक्ष्म शिक्षण का मेरा अनुभव अत्यंत उपयोगी और महत्वपूर्ण रहा। इसने मुझे जीवन की झिझक को दूर करने, साहस और निडरता के साथ पढ़ाने में मदद की। छोटे-छोटे अवसरों के माध्यम से मैंने न केवल पढ़ाने का अभ्यास किया, बल्कि आत्मविश्वास भी प्राप्त किया।

सीमित समूह के सामने पढ़ाने का अवसर मिला। शुरुआत में थोड़ी घबराहट हुई, लेकिन धीरे-धीरे आत्मविश्वास बढ़ता गया। बच्चों के प्रश्नों और उनकी प्रतिक्रियाओं से मुझे अपनी कमियाँ और खूबियाँ समझने का अवसर मिला। साथ ही, साथियों और अध्यापक की मार्गदर्शन से यह सीखा कि भाषा सरल और स्पष्ट होनी चाहिए तथा आत्मविश्वास और अधिक मजबूत बनाना आवश्यक है।

इस सूक्ष्म शिक्षण अनुभव ने मुझे वास्तविक कक्षा शिक्षण के लिए तैयार किया। इस प्रक्रिया ने मेरे आत्मविश्वास और शिक्षण कौशल को सशक्त बनाया। वास्तव में, सूक्ष्म शिक्षण ने मेरी बोलने की क्षमता और आत्मविश्वास दोनों को विकसित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भूषण मिंज
प्रथम वर्ष 'अ'

### Experience of Microteaching

Microteaching was the most important part of our teacher training course. In the beginning, I was very excited but also nervous, as this was a new experience where we were taught the essential skills of being a teacher.

On the very first day of microteaching, I felt tense and anxious, wondering what would happen. I questioned myself: *Will I be able to do this or not?* Although I had some experience of teaching tuition at home during my school days, taking my first formal class as a trainee teacher made me nervous.

Gradually, with practice, I improved. Microteaching turned out to be a wonderful and enriching learning experience. It helped me enhance my self-confidence, improve my language skills, interact effectively with students, and prepare lesson plans systematically.

By the end of the microteaching sessions, I gained valuable experience in teaching Mathematics. I also realized that being a teacher is not just about teaching a subject, but about developing a unique personality that inspires and guides students.

Binisha Hurhuria

### माइक्रो टीचिंग का अनुभव

माइक्रो टीचिंग मेरे लिए एक बहुत ही उपयोगी और सीखने योग्य अनुभव रहा। इसमें मैंने यह सीखा कि एक अच्छे शिक्षक को विषय-वस्तु को किस प्रकार प्रस्तुत करना चाहिए। एक छोटे से सूक्ष्म शिक्षण समूह में पढ़ाने का अवसर मिलने से मुझे आत्मविश्वास बढ़ाने और अपनी शिक्षण शैली को सुधारने का मौका मिला।

इस प्रक्रिया के दौरान मैंने पाठ योजनाएँ बनाना सीखा, जिनकी अवधि लगभग 5 मिनट की थी। इसने मुझे यह समझने में मदद की कि सीमित समय में स्पष्ट उद्देश्य के साथ पढ़ाना चाहिए और विषय-वस्तु को सरल भाषा में प्रस्तुत करना चाहिए, ताकि बच्चे उसे जल्दी और आसानी से समझ सकें।

इसके साथ ही, मुझे प्रश्न पूछने, ब्लैकबोर्ड का उपयोग करने और बच्चों को सक्रिय रखने जैसी शिक्षण कौशलों का अभ्यास करने का अवसर मिला। बार-बार अभ्यास करने से मेरे अंदर आत्मविश्वास में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

**चिरंजीत बाः**
प्रथम वर्ष 'ब'

### Microteaching Experience

मैंने अपने सूक्ष्म शिक्षण का प्रारंभ 18 अगस्त से किया, जो दो सप्ताह तक चला। शुरुआत में मुझे यह समझ नहीं आ रहा था कि इसमें मुझे क्या और कैसे करना है। मन में थोड़ी झिझक थी, लेकिन जब मैंने डेमो देखा तो मुझे पूरी प्रक्रिया समझ में आई। यह जानकर अच्छा लगा कि किसी नई चीज़ की शुरुआत करने से हमें न केवल जानकारी मिलती है, बल्कि उसे करने का आत्मविश्वास भी मिलता है। यह अभ्यास 2 सितम्बर तक चला।

इस अवधि में मैंने अपने अंदर कई सकारात्मक परिवर्तन महसूस किए। सबसे बड़ा परिवर्तन आत्मविश्वास का बढ़ना था। मेरी आवाज़ में दृढ़ता आई, लोगों के सामने प्रस्तुति देने की क्षमता बढ़ी और अपने अनुभव साझा करने का साहस भी विकसित हुआ। यह मेरे लिए बेहद खास दिन थे, क्योंकि इतने कम समय में मैंने अपने व्यक्तित्व में कई बदलाव देखे।

मुझे ऐसा भी अनुभव हुआ कि एक अच्छी शिक्षिका केवल स्वयं को निखारने तक सीमित नहीं रहती, बल्कि अपने आसपास के लोगों को भी प्रेरित और प्रोत्साहित करती है, ताकि वे भी आगे बढ़ सकें।

मोनिका लकड़ा
प्रथम वर्ष 'अ'

## तपती भट्टी

***"यदि आप सूरज की तरह चमकना चाहते हो, तो सूरज की तरह तपना सीखो।"***

**– डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम**

महाविद्यालय में सूक्ष्म शिक्षण कौशल का आयोजन 18/08/25 को हुआ। यह मेरे लिए एक बिल्कुल नया और अनमोल अनुभव था। जब पहली बार अभ्यास के लिए मंच पर गया और सामने अपने सभी सहपाठियों को देखा, तो घबराहट से चेहरा सफेद पड़ गया। समझ ही नहीं आ रहा था कि क्या करूँ। पहला दिन कठिन रहा, लेकिन धीरे-धीरे मैंने महसूस किया कि किसी के पास जन्म से प्रतिभा नहीं होती, बल्कि हम सबके पास अपनी प्रतिभा को निखारने और विकसित करने का समान अवसर होता है।

मैंने महाविद्यालय के इस सूक्ष्म शिक्षण रूपी *कोमल भट्टी* में तपने का निश्चय किया। इस भट्टी ने मुझे कई तरह से गढ़ा।

- इसने मेरे आत्मविश्वास को तपाया।
- मेरे ज्ञान रूपी भंडार को तपाया।
- मेरी कमियों को दूर कर मुझे और निखारा।

जैसे लोहार तपते हुए लोहे को नया आकार देता है, वैसे ही शिक्षकों और साथियों ने निरंतर मार्गदर्शन और सुझावों के माध्यम से मुझे आकार दिया। धीरे-धीरे मेरे व्यक्तित्व और कौशल में नया चमक और निखार आने लगा। इस तपने की प्रक्रिया से मैंने जाना कि शिक्षण केवल एक पेशा नहीं, बल्कि व्यक्तित्व, चरित्र, क्षमता और प्रतिभा को संवारने की महान साधना है।

अरविन्द तोपनो
प्रथम वर्ष 'ब'

## सूक्ष्म शिक्षण का अनुभव

मेरे महाविद्यालय में 18 अगस्त 2025 से सूक्ष्म शिक्षण पाठ योजना का अभ्यास आरंभ हुआ। इसकी शुरुआत छोटे समूहों में हुई, जिन्हें *मेंटॉर ग्रुप* कहा जाता है। शुरू-शुरू में, भले ही मेरी सहेलियाँ मेरे साथ थीं, फिर भी मुझे इस *मेंटॉर ग्रुप* में अच्छा नहीं लगता था। जब भी मुझे समूह के सामने अपने शिक्षण कौशल का प्रदर्शन करना होता, मैं बहुत डर और झिझक महसूस करती थी। मुझे तो यह भी लगता था कि मेरे भीतर आत्मविश्वास बिल्कुल नहीं है और न ही मैं किसी को पढ़ा या समझा सकती हूँ।

शुरुआत में न तो मैं ठीक से श्यामपट्ट (ब्लैकबोर्ड) पर लिख पाती थी और न ही स्पष्ट रूप से बोल पाती थी। बोलते समय मेरा गला कांप उठता और डर के कारण मेरी धड़कनें तेज हो जाती थीं। उस समय मैं खुद को समझाकर कहती – *"हिम्मत रख असियन, थोड़ी देर और, बस थोड़ी देर सबके सामने खड़ी रह। All is well!"* इस तरह खुद को संभालने की कोशिश करती रही। धीरे-धीरे, लगातार प्रयास और बार-बार मंच पर जाने से मुझमें आत्मविश्वास आने लगा। इस दौरान मेरे *मेंटॉर* और *मेंटॉर ग्रुप* के अन्य सदस्यों ने मेरी खूबियों और कमियों की ओर सकारात्मक ढंग से ध्यान दिलाया। उनकी सूचनाओं और मार्गदर्शन ने मुझे अपनी कमजोरियों को सुधारने और अपने शिक्षण को सही दिशा देने में बहुत मदद की।

अब जब भी मैं किसी सभा या समूह के सामने खड़ी होती हूँ, तो निडर होकर अपनी बातें सहजता से रख पाती हूँ। अब मुझे अपने *मेंटॉर ग्रुप* में भी बहुत अच्छा लगता है। इस पूरे अनुभव ने मुझे समझा दिया कि मेहनत और अभ्यास से कोई भी डर खत्म किया जा सकता है और आत्मविश्वास हासिल किया जा सकता है। इसलिए कहा जाता है—
***"कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।"***

असियन एक्का
प्रथम वर्ष 'A'

## सूक्ष्म शिक्षण व

सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास की शुरुआत 18/08/25 को हुई थी। यह अभ्यास छोटे समूह (माइक्रो ग्रुप) में किया गया, जहाँ प्रत्येक छात्र को अपने गुणों और कौशल को प्रस्तुत करने का अवसर मिला। शुरुआत में मुझे काफी डर और घबराहट महसूस हुई, लेकिन जैसे-जैसे अभ्यास आगे बढ़ा, मेरा आत्मविश्वास बढ़ता गया और डर धीरे-धीरे दूर होता गया। सूक्ष्म शिक्षण ने मुझे यह सिखाया कि एक शिक्षक को विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए किन-किन कौशलों की आवश्यकता होती है। इस प्रक्रिया में मैंने सात प्रमुख शिक्षण कौशलों का अभ्यास किया और समझा कि विद्यार्थियों तक ज्ञान पहुँचाने के लिए भाषा सरल, स्पष्ट और प्रभावी होनी चाहिए। हालाँकि, अभी भी कभी-कभी मुझे झिझक और डर लगता है कि मैं सही तरीके से पढ़ा पाऊँगी या नहीं। लेकिन मैंने यह सीखा है कि अगर कुछ नया करना है, तो हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। मुझे वह कहावत भी याद आती है कि,

**"जीवन में आगे बढ़ना हो, तो मनोबल को कमज़ोर मत करो।**
**भाग्य आगे है, लेकिन प्रयास किए बिना सफलता नहीं मिलती।**
**धीरे-धीरे बढ़ते रहो, अंततः मंज़िल ज़रूर मिलेगी।"**

इन बातों से प्रेरणा लेकर मैंने यह ठान लिया है कि खुद को कभी कमज़ोर नहीं समझूँगी और लगातार अपनी क्षमताओं को निखारती रहूँगी। इस अनुभव ने मुझे अपने भविष्य के लिए आत्मविश्वास दिया है और अपने गुणों को और बेहतर बनाने का अवसर प्रदान किया है।

अनुष्का मिंज
प्रथम वर्ष 'अ'

Micro
Teaching
PLAN
TEACH
FEED BACK
RE-PLAN
RE-TEACH
RE-FEED BACK

Grammar
A, B, C, D ...

## सर्वपल्ली राधाकृष्णन

सर्वपल्ली राधाकृष्णन भारत के एक विद्वान, राजनीतिज्ञ, दार्शनिक और राजनेता थे। उन्होंने भारत के पहले उपराष्ट्रपति और दूसरे राष्ट्रपति के रूप में कार्य किया। राधाकृष्णन ने अपना जीवन और करियर एक लेखक के रूप में बिताया और अपने धर्म का वर्णन, बचाव और प्रचार करने का प्रयास किया, जिसे उन्होंने हिंदू धर्म, वेदांत और आत्मा के धर्म के रूप में विभिन्न रूपों में संदर्भित किया। वह यह दिखाना चाहते थे कि उनका हिंदू धर्म दार्शनिक रूप से सुदृढ़ होने के साथ-साथ नैतिक रूप से भी व्यवहार्य था। वह अक्सर भारतीय और पश्चिमी दोनों दार्शनिक संदर्भों में सहज प्रतीत होते हैं, और अपने गद्य में पश्चिमी और भारतीय दोनों स्रोतों का उपयोग करते हैं। परिणामस्वरूप, राधाकृष्णन को अकादमिक जगत में पश्चिमी हिंदू धर्म के प्रतीक के रूप में सराहा गया है।

सर्वपल्ली राधा कृष्णन की इस जीवनी में हम उनके प्रारंभिक जीवन और परिवार, उनकी शिक्षा, एक शिक्षक के रूप में उनके करियर, उनके राजनीतिक जीवन और उनकी मृत्यु के बारे में जानेंगे।

### सर्वपल्ली राधाकृष्णन का प्रारंभिक जीवन

इस खंड में हम राधाकृष्णन का जन्म कब हुआ, उनके माता-पिता और उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में जानेंगे।

- सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जन्म तिथि 5 सितंबर 1888 थी।
- उनका जन्म ब्रिटिश भारत के मद्रास प्रेसीडेंसी के तिरुत्तनी में एक तेलुगु भाषी नियोगी ब्राह्मण परिवार में हुआ था, जो वर्तमान में भारत का तमिलनाडु है।
- उनके पिता का नाम सर्वपल्ली वीरस्वामी था जो एक स्थानीय ज़मींदार की सेवा में एक अधीनस्थ राजस्व अधिकारी थे और उनकी माता का नाम सर्वपल्ली सीता था।
- उनका परिवार आंध्र प्रदेश के नेल्लोर जिले के सर्वपल्ली गाँव से है। वे तिरुत्तनी और तिरुपति कस्बों में पले-बढ़े।

### सर्वपल्ली राधाकृष्णन शिक्षा

- उनकी प्रारंभिक शिक्षा तिरुत्तनी के केवी हाई स्कूल में हुई। 1896 में, उन्होंने तिरुपति के हरमन्सबर्ग इवेंजेलिकल लूथरन मिशन स्कूल और वालाजापेट के सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय में दाखिला ले लिया।
- हाई स्कूल की पढ़ाई के लिए उन्होंने वेल्लोर के वूरहीस कॉलेज में दाखिला लिया। 17 साल की उम्र में, कला प्रथम श्रेणी पूरी करने के बाद, उन्होंने मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज में दाखिला लिया। 1906 में उन्होंने उसी संस्थान से स्नातक और स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की।
- सर्वपल्ली ने अपनी स्नातक उपाधि के शोध प्रबंध के लिए लिखा था, "वेदांत का आचार-विचार और उसकी आध्यात्मिक पूर्वधारणाएँ"। यह इस आरोप के जवाब में लिखा गया था कि वेदांत योजना में नैतिकता के लिए कोई स्थान नहीं है। राधाकृष्णन के दो प्रोफेसरों, रेव. विलियम मेस्टन और डॉ. अल्फ्रेड जॉर्ज हॉग ने उनके शोध प्रबंध की प्रशंसा की थी। जब राधाकृष्णन केवल बीस वर्ष के थे, तब उनका शोध प्रबंध प्रकाशित हुआ था।

### सर्वपल्ली राधाकृष्णन परिवार

- सर्वपल्ली राधाकृष्णन का विवाह 16 वर्ष की उम्र में सिवाकामु से हुआ था।
- सिवाकामू राधा कृष्णन के दूर के चचेरे भाई थे।
- राधाकृष्णन और शिवकामु 51 वर्षों से अधिक समय तक सुखपूर्वक विवाहित रहे।
- राधाकृष्णन के छह बच्चे थे, पांच बेटियां और एक बेटा।
- उनके पुत्र सर्वपल्ली गोपाल एक प्रसिद्ध भारतीय इतिहासकार थे। उन्होंने अपने पिता की जीवनी "राधाकृष्णन: एक जीवनी" और "जवाहरलाल नेहरू: एक जीवनी" भी लिखी।

### राधा कृष्णन का शैक्षणिक जीवन

- राधाकृष्णन को अप्रैल 1909 में मद्रास प्रेसीडेंसी कॉलेज के दर्शनशास्त्र विभाग में नियुक्त किया गया।
- 1918 में उन्हें मैसूर विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र का प्रोफेसर नियुक्त किया गया, जहां उन्होंने मैसूर के महाराजा कॉलेज में पढ़ाया।
- महाराजा कॉलेज में रहते हुए उन्होंने द क्वेस्ट, जर्नल ऑफ फिलॉसफी और इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एथिक्स जैसी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं के लिए कई लेख लिखे।
- उन्होंने अपना पहला उपन्यास, "रवींद्रनाथ टैगोर का दर्शन" भी पूरा किया। उन्होंने दावा किया कि टैगोर का दर्शन "भारतीय आत्मा की सच्ची अभिव्यक्ति" है।
- 1920 में उन्होंने अपनी दूसरी पुस्तक, द रेन ऑफ रिलिजन इन कंटेम्पररी फिलॉसफी प्रकाशित की।
- 1921 में उन्हें कलकत्ता विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर के रूप में नियुक्त किया गया, जहां उन्होंने मानसिक और नैतिक विज्ञान के किंग जॉर्ज पंचम चेयर पर कार्य किया।
- जून 1926 में उन्होंने ब्रिटिश एम्पायर यूनिवर्सिटीज़ कांग्रेस में कलकत्ता विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया और सितम्बर 1926 में उन्होंने हार्वर्ड विश्वविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय दर्शनशास्त्र कांग्रेस में भाग लिया।
- 1929 में, राधाकृष्णन को मैनचेस्टर कॉलेज में प्रिंसिपल जे. एस्टलिन कारपेंटर के रिक्त पद पर नियुक्त किया गया। इस अवसर पर उन्हें ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय के छात्रों को तुलनात्मक धर्म पर व्याख्यान देने का अवसर मिला।
- जून 1931 में जॉर्ज पंचम ने शिक्षा के क्षेत्र में उनकी सेवाओं के लिए उन्हें नाइट की उपाधि दी, तथा भारत के गवर्नर जनरल अर्ल ऑफ विलिंगडन ने अप्रैल 1932 में औपचारिक रूप से उन्हें यह सम्मान प्रदान किया।
- भारत की स्वतंत्रता के बाद उन्होंने इस उपाधि का प्रयोग बंद कर दिया और इसके स्थान पर डॉक्टर की शैक्षणिक उपाधि का प्रयोग करने लगे।
- 1931 से 1936 तक वे आंध्र विश्वविद्यालय के कुलपति रहे।
- राधाकृष्णन को ऑल सोल्स कॉलेज का फेलो चुना गया तथा 1936 में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में पूर्वी धर्म और नैतिकता के स्पैलिंग प्रोफेसर नियुक्त किया गया।
- उन्हें 1937 में साहित्य के नोबेल पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया था। इस पुरस्कार के लिए नामांकन 1960 के दशक तक आते रहे।
- 1939 में, उन्हें पंडित मदन मोहन मालवीय के बाद बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) का कुलपति नियुक्त किया गया। वे जनवरी 1948 से जनवरी 1949 तक इसके कुलपति रहे।

## राधा कृष्णन का राजनीतिक जीवन

इस खंड में हम राधा कृष्णन के राजनीतिक दृष्टिकोण और करियर, उपराष्ट्रपति के रूप में उनके कार्यकाल और अंततः वे राष्ट्रपति कैसे बने, इस पर चर्चा करेंगे।

- एक आशाजनक शैक्षणिक जीवन के बाद, राधाकृष्णन ने जीवन के अंतिम वर्षों में अपना राजनीतिक जीवन शुरू किया। उनका राजनीतिक जीवन उनके विदेशी प्रभाव के बाद शुरू हुआ।

- वह 1928 में आंध्र महासभा में भाग लेने वाले दिग्गजों में से एक थे, जहां उन्होंने मद्रास प्रेसीडेंसी के सीडेड डिस्ट्रिक्ट्स डिवीजन का नाम बदलकर रायलसीमा रखने के विचार की वकालत की थी।

-1931 में, उन्हें बौद्धिक सहयोग के लिए राष्ट्र संघ की समिति में नियुक्त किया गया, जहां वे भारतीय विचारों के एक हिंदू विशेषज्ञ और पश्चिमी दृष्टि से समकालीन समाज में पूर्वी संस्थाओं की भूमिका के एक विश्वसनीय अनुवादक के रूप में जाने गए।

-भारत की स्वतंत्रता के बाद के वर्षों में राधाकृष्णन की भारतीय राजनीति के साथ-साथ विदेशी मामलों में भी भागीदारी बढ़ी।

-1946 से 1951 तक राधाकृष्णन नवगठित यूनेस्को (संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन) के सदस्य रहे, इसके कार्यकारी बोर्ड में बैठे और भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया।

-राधाकृष्णन भारत की स्वतंत्रता के बाद दो वर्षों तक भारतीय संविधान सभा के सदस्य भी रहे।

-विश्वविद्यालय आयोग की मांगों और ऑक्सफोर्ड में स्पैलिंग प्रोफेसर के रूप में उनकी निरंतर जिम्मेदारियों को राधाकृष्णन की यूनेस्को और संविधान सभा के प्रति प्रतिबद्धताओं के साथ संतुलित किया जाना था।

-जब 1949 में विश्वविद्यालय आयोग की रिपोर्ट पूरी हो गई, तो तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने राधाकृष्णन को मास्को में भारतीय राजदूत नियुक्त किया, और वे 1952 तक इस पद पर रहे। राज्यसभा में निर्वाचित होने के साथ ही राधाकृष्णन अपने दार्शनिक और राजनीतिक विश्वासों को मूर्त रूप देने में सक्षम हो गए।

-1952 में राधाकृष्णन भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति चुने गए तथा 1962 में वे देश के दूसरे राष्ट्रपति चुने गए।

-अपने कार्यकाल के दौरान राधाकृष्णन ने विश्व शांति और सार्वभौमिक भाईचारे की बढ़ती आवश्यकता को देखा।

-राधाकृष्णन को इस ज़रूरत का महत्व तब समझ आया जब उन्होंने वैश्विक संकटों को उभरते देखा। जब उन्होंने उपराष्ट्रपति का पद संभाला, तब कोरियाई युद्ध अपने पूरे ज़ोरों पर था।

-1960 के दशक के प्रारम्भ में राधाकृष्णन के राष्ट्रपति काल में चीन के साथ राजनीतिक संघर्ष छाया रहा, जिसके बाद भारत और पाकिस्तान के बीच शत्रुतापूर्ण स्थिति उत्पन्न हो गयी।

-इसके अलावा, शीत युद्ध ने पूर्व और पश्चिम को विभाजित कर दिया, जिससे दोनों ही देश रक्षात्मक हो गए और एक-दूसरे से सावधान रहने लगे।

-राधाकृष्णन ने राष्ट्र संघ जैसे स्वयंभू अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की विभाजनकारी क्षमता और प्रभुत्वशाली चरित्र पर सवाल उठाया।

-इसके बजाय, उन्होंने समग्र अनुभव के आध्यात्मिक आधार पर केंद्रित एक अभिनव अंतर्राष्ट्रीयतावाद को बढ़ावा देने की वकालत की। तभी संस्कृतियों और राष्ट्रों के बीच आपसी समझ और सहिष्णुता को बढ़ावा मिलेगा।

## राधा कृष्णन के दार्शनिक विचार

- राधाकृष्णन ने पूर्वी और पश्चिमी विचारों को एक साथ लाने का प्रयास किया, उन्होंने अज्ञानी पश्चिमी आलोचना के खिलाफ हिंदू धर्म का बचाव किया, साथ ही पश्चिमी दार्शनिक और धार्मिक विचारों को भी एकीकृत किया।

- राधाकृष्णन वेदांत के सबसे प्रभावशाली प्रवक्ताओं में से एक थे।

- उनका तत्वमीमांसा अद्वैत वेदांत पर आधारित था, लेकिन उन्होंने आधुनिक पाठकों के लिए इसकी पुनर्व्याख्या की।

- उन्होंने मानव प्रकृति की सच्चाई और विविधता को पहचाना, जिसे उन्होंने परम ब्रह्म में निहित और समर्थित माना।

- राधाकृष्णन के लिए धर्मशास्त्र और पंथ बौद्धिक सूत्रीकरण होने के साथ-साथ धार्मिक अनुभव या धार्मिक अंतर्ज्ञान के प्रतीक भी हैं।

- राधाकृष्णन ने धार्मिक अनुभव की उनकी व्याख्या के अनुसार विभिन्न धर्मों को वर्गीकृत किया, जिसमें अद्वैत वेदांत को सर्वोच्च स्थान दिया गया।

- अन्य धर्मों की बौद्धिक रूप से मध्यस्थता वाली अवधारणाओं की तुलना में, राधाकृष्णन ने अद्वैत वेदांत को हिंदू धर्म का सर्वोत्तम प्रतिनिधि माना, क्योंकि यह अंतर्ज्ञान पर आधारित था।

- राधाकृष्णन के अनुसार, वेदांत सर्वोच्च प्रकार का धर्म है क्योंकि यह सबसे प्रत्यक्ष अंतर्ज्ञान अनुभव और आंतरिक अनुभूति प्रदान करता है।

- पश्चिमी संस्कृति और दर्शन से परिचित होने के बावजूद, राधाकृष्णन इसके आलोचक थे। उन्होंने कहा कि, वस्तुनिष्ठता के अपने दावों के बावजूद, पश्चिमी दार्शनिक अपने ही समाज के धार्मिक प्रभावों से प्रभावित थे।

### सर्वपल्ली राधाकृष्णन की मृत्यु

- राधा कृष्णन के पिता का 26 नवम्बर 1956 को निधन हो गया। उन्होंने दोबारा विवाह नहीं किया और अपनी मृत्यु तक वे विधुर रहे।
- 1967 में राधाकृष्णन ने सार्वजनिक जीवन से संन्यास ले लिया।
- उन्होंने अपने जीवन के अंतिम आठ वर्ष मद्रास के मायलापुर में अपने द्वारा डिजाइन किये गए घर में बिताए।
- 17 अप्रैल 1975 को राधाकृष्णन का निधन हो गया।

### सर्वपल्ली राधाकृष्णन के पुरस्कार और सम्मान

- राधाकृष्णन को 1954 में भारत के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार भारत रत्न से सम्मानित किया गया।
- वर्ष 1931 में शिक्षा के क्षेत्र में उनकी सेवाओं के लिए किंग जॉर्ज पंचम ने उन्हें नाइट की उपाधि से सम्मानित किया।
- उन्हें 1954 में जर्मनी द्वारा विज्ञान और कला के लिए पौर ले मेरिट पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- उन्हें वर्ष 1954 में मैक्सिको द्वारा ऑर्डर ऑफ द एज़्टेक ईगल के सैश फर्स्ट क्लास से सम्मानित किया गया था।
- उन्हें 1963 में यूनाइटेड किंगडम द्वारा ऑर्डर ऑफ मेरिट की सदस्यता से सम्मानित किया गया।
- उन्हें रिकार्ड 27 बार नोबेल पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया। साहित्य के लिए 16 बार और शांति के लिए 11 बार।
- 1938 में उन्हें ब्रिटिश अकादमी का फेलो चुना गया।
- उन्हें 1961 में जर्मन पुस्तक व्यापार का शांति पुरस्कार प्रदान किया गया।
- वर्ष 1968 में वे साहित्य अकादमी फेलोशिप पाने वाले पहले व्यक्ति थे, जो साहित्य अकादमी द्वारा किसी लेखक को दिया जाने वाला सर्वोच्च सम्मान है।
- 1962 से भारत में राधाकृष्णन के जन्मदिन 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है, जो राधाकृष्णन के इस विश्वास को मान्यता देता है कि शिक्षकों को विश्व में सर्वश्रेष्ठ मस्तिष्क होना चाहिए।
- 1975 में उन्हें अहिंसा को बढ़ावा देने और ईश्वर के एक सामान्य सत्य को व्यक्त करने के लिए टेम्पलटन पुरस्कार मिला, जिसमें सभी लोगों के लिए करुणा और ज्ञान शामिल था।

### सर्वपल्ली राधा कृष्णन की साहित्यिक कृतियाँ

- राधा कृष्णन द्वारा लिखित पहली पुस्तक वर्ष 1918 में रवींद्रनाथ टैगोर के दर्शन पर आधारित थी।
- उनकी दूसरी पुस्तक 1923 में भारतीय दर्शन नाम से प्रकाशित हुई।
- 1926 में प्रकाशित द हिंदू व्यू ऑफ लाइफ राधा कृष्णन की तीसरी पुस्तक थी जो हिंदू दर्शन और मान्यताओं से संबंधित थी।
- जीवन का एक आदर्शवादी दृष्टिकोण 1929 में प्रकाशित हुआ था।
- कल्कि या सभ्यता का भविष्य 1929 में प्रकाशित हुआ था।
- उन्होंने वर्ष 1939 में ईस्टर्न रिलिजंस एंड वेस्टर्न थॉट नामक अपनी छठी पुस्तक प्रकाशित की।
- धर्म और समाज 1947 में सातवीं पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुई।
- 1948 में भगवद्गीता: एक परिचयात्मक निबंध, संस्कृत पाठ, अंग्रेजी अनुवाद और नोट्स के साथ प्रकाशित हुई।
- 1950 में उनकी पुस्तक धम्मपद प्रकाशित हुई।
- उनकी दसवीं पुस्तक द प्रिंसिपल उपनिषद्स 1953 में प्रकाशित हुई।
- रिकवरी ऑफ फेथ 1956 में प्रकाशित हुई थी।
- बारहवीं पुस्तक 1957 में प्रकाशित 'ए सोर्स बुक इन इंडियन फिलॉसफी' थी।
- ब्रह्म सूत्र: आध्यात्मिक जीवन का दर्शन 1959 में प्रकाशित हुआ था।]
- उनकी अंतिम पुस्तक 'रिलिजन, साइंस एंड कल्चर' 1968 में प्रकाशित हुई।

### निष्कर्ष

सर्वपल्ली राधाकृष्णन एक शिक्षाविद, दार्शनिक और राजनेता थे, जो बीसवीं सदी के अकादमिक जगत में सबसे प्रसिद्ध और प्रमुख भारतीय विचारकों में से एक थे। राधाकृष्णन ने अपना जीवन और करियर एक लेखक के रूप में बिताया और अपने धर्म का वर्णन, बचाव और प्रचार करने का प्रयास किया, जिसे उन्होंने हिंदू धर्म, वेदांत और आत्मा के धर्म के रूप में विभिन्न रूपों में संदर्भित किया। राधाकृष्णन राष्ट्रपति के रूप में जाने जाने के बजाय, अपने शैक्षणिक कौशल और एक शिक्षक के रूप में प्रसिद्ध थे।

## यीशु की माता मरियम का जन्म दिवस

ईसाई धर्म में माता मरियम का स्थान बहुत ऊँचा और पवित्र माना जाता है। वे केवल यीशु मसीह की माता ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानवता की आध्यात्मिक माता कहलाती हैं। उनकी विनम्रता, करुणा, सेवा और आज्ञाकारिता उन्हें सभी के लिए आदर्श बनाती है। हर वर्ष 8 सितम्बर को उनका जन्म दिवस पूरे विश्व में बड़े ही श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस दिन को चर्च की भाषा में "Nativity of Mother Mary" या "Feast of the Birth of Virgin Mary" कहा जाता है।

**मरियम के जन्म का महत्व**

ईसाई परंपरा के अनुसार, मरियम के माता-पिता का नाम जोआकीम और अन्ना था। कई वर्षों तक संतान न होने के कारण वे चिंतित रहते थे, परंतु ईश्वर की कृपा से मरियम का जन्म हुआ। उनका जन्म स्वयं में एक चमत्कार माना जाता है, क्योंकि वे उसी पात्र के रूप में आईं जिसके द्वारा संसार के उद्धारकर्ता यीशु मसीह का अवतार हुआ।

मरियम का जन्म मानव इतिहास के लिए एक नई आशा, मुक्ति और उद्धार की शुरुआत था। उनका जीवन हमें यह सिखाता है कि ईश्वर की योजना हमेशा बड़ी और अद्भुत होती है।

**मरियम का जीवन और आदर्श :** मरियम का पूरा जीवन गहरी आस्था और आज्ञाकारिता का उदाहरण है। जब स्वर्गदूत गेब्रियल ने उन्हें संदेश दिया कि वे ईश्वर के पुत्र को जन्म देंगी, तो उन्होंने निडर होकर कहा – "मुझे तेरे वचन के अनुसार होने दे"। इस "हाँ" (Fiat) ने सम्पूर्ण मानवता के उद्धार का मार्ग खोल दिया। उन्होंने अपने जीवन में हमेशा विनम्रता और करुणा का परिचय दिया। कठिनाइयों और दुखों के बावजूद वे ईश्वर के प्रति विश्वास में डटी रहीं। क्रूस पर अपने पुत्र यीशु को पीड़ित होते देखना किसी भी माता के लिए असहनीय था, लेकिन उन्होंने धैर्य और समर्पण का मार्ग चुना। यही कारण है कि वे आज भी सम्पूर्ण मानवता की "माता" मानी जाती हैं।

**धार्मिक उत्सव :** मरियम के जन्म दिवस पर विशेष रूप से चर्चों में मिस्सा (Mass), प्रार्थना सभाएँ और स्तुति-गान आयोजित किए जाते हैं। भक्तजन मरियम से प्रार्थना करते हैं कि वे अपने पुत्र यीशु मसीह के समान उन्हें प्रेम, शांति और विश्वास प्रदान करें।
कैथोलिक चर्चों में इस दिन को "मरियम माता का जन्मोत्सव" कहा जाता है। भक्त रोज़री (Rosary) पढ़ते हैं और उनकी जीवन-यात्रा पर मनन करते हैं।

**सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व :** भारत में यह पर्व विशेष रूप से गोवा, केरल और मंगळोर के ईसाई समुदायों में बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। मंगळोर क्षेत्र में इसे "माँ बोंसाचे फेस्ट" (Monti Fest) के नाम से जाना जाता है।
इस दिन खेतों से पहली फसल काटकर चर्च में अर्पित की जाती है। परिवार एक साथ बैठकर विशेष भोजन (Novem Jevon) करते हैं। समाज में भाईचारा, प्रेम और एकता का संदेश फैलाया जाता है। बच्चों और युवाओं को इस दिन विशेष आशीर्वाद दिया जाता है। विद्यालयों और कॉलेजों में प्रार्थना सभाएँ और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होते हैं।

**विश्वभर में उत्सव :** मरियम का जन्म दिवस केवल भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में बड़े उत्साह से मनाया जाता है। यूरोप, लैटिन अमेरिका और अफ्रीका के कई देशों में शोभायात्राएँ, गीत-संगीत, सामूहिक भोज और समाजसेवा के कार्यक्रम होते हैं। यह दिन लोगों को एक साथ जोड़ने और ईश्वर की कृपा का अनुभव कराने का अवसर बनता है।

**आध्यात्मिक संदेश :** मरियम का जन्म दिवस हमें अनेक आध्यात्मिक संदेश देता है –

1. विश्वास और भरोसा – ईश्वर पर हमेशा भरोसा रखना चाहिए, चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी हों।
2. विनम्रता और सेवा – दूसरों की सेवा करना ही सच्ची प्रार्थना है।
3. त्याग और धैर्य – जीवन की कठिनाइयों को धैर्य और त्याग से स्वीकार करना चाहिए।
4. शांति और प्रेम – मरियम हमें सिखाती हैं कि शांति और प्रेम से ही संसार में परिवर्तन लाया जा सकता है।

**निष्कर्ष**

यीशु की माता मरियम का जन्म दिवस केवल ईसाई समुदाय का पर्व नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए प्रेरणा का दिन है। उनका जीवन हमें सिखाता है कि सच्ची महानता विनम्रता, सेवा और विश्वास में छिपी है।
इसलिए 8 सितम्बर को मनाया जाने वाला मरियम का जन्मोत्सव एक आध्यात्मिक नवजागरण है। यह हमें याद दिलाता है कि यदि हम प्रेम, शांति और सेवा के मार्ग पर चलें, तो हम भी दुनिया को बेहतर बना सकते हैं।

1914
ADARSH HINDU+2 HIGH SCHOOL
HAZARIBAG
VIVEKANAND BUILDING

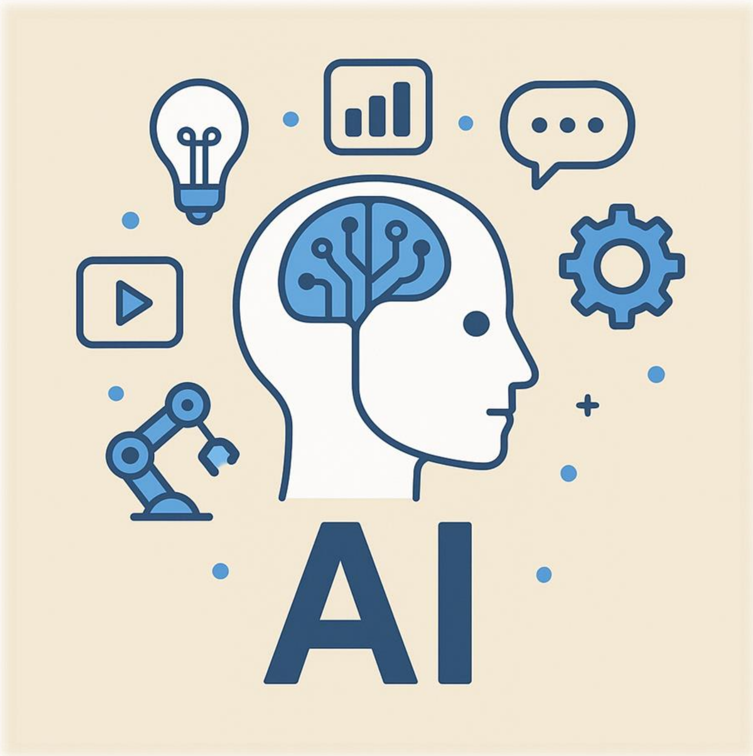

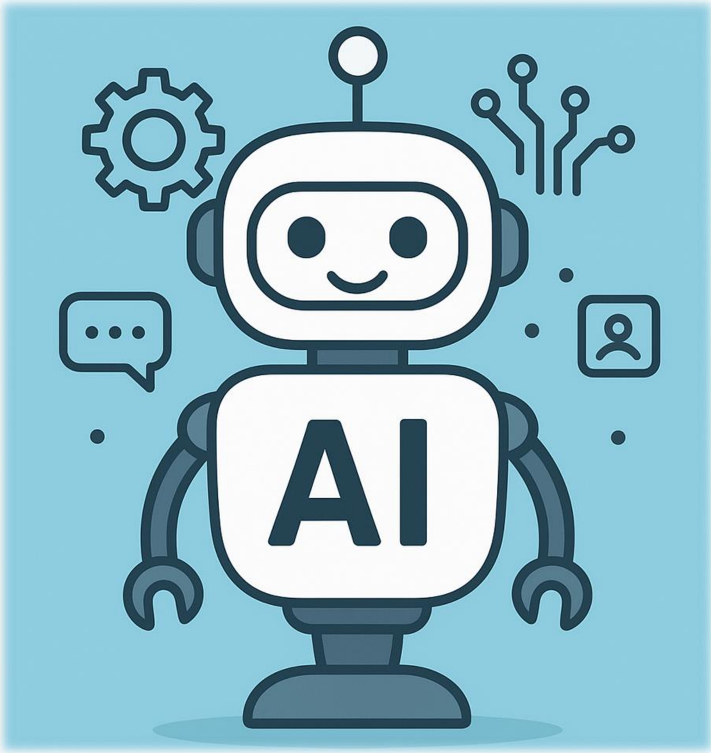


**AI यानी Artificial Intelligence (कृत्रिम बुद्धिमत्ता)**

इसका मतलब है — ऐसी मशीन या कंप्यूटर प्रोग्राम जो **इंसानों की तरह सोचने, सीखने, निर्णय लेने और समस्याओं का हल करने** की क्षमता रखे।

**AI को कैसे समझें?**

आप इसे आसान भाषा में इस तरह समझ सकते हैं:

- जैसे इंसान दिमाग का उपयोग करके अनुभवों से सीखता है, उसी तरह AI डेटा (जानकारी) से सीखता है।
- इंसान अगर बार-बार कोई काम करता है तो उसमें माहिर हो जाता है, वैसे ही AI भी बार-बार सीखकर किसी काम को बेहतर करता है।
- फर्क यह है कि इंसान प्राकृतिक दिमाग से सोचता है, और AI को कंप्यूटर प्रोग्रामिंग और एल्गोरिद्म से सोचने की क्षमता दी जाती है।

**AI के कुछ उदाहरण (Samples of AI):**

1. **गूगल मैप्स** – रास्ता दिखाना, ट्रैफिक की जानकारी देना।
2. **वॉइस असिस्टेंट्स** – जैसे Siri, Alexa, Google Assistant (आपकी बात समझकर जवाब देना)।
3. **YouTube / Netflix की सिफारिशें** – आपको कौन-सा वीडियो या मूवी पसंद आएगा, यह AI अंदाज़ा लगाता है।
4. **फेस अनलॉक** – मोबाइल का चेहरा पहचानकर अनलॉक होना।
5. **ChatGPT** (जैसे मैं 🙂 ) – सवालों का जवाब देना, लेखन या अनुवाद में मदद करना।

**दैनिक जीवन में AI की उपयोगिता:**

1. **शिक्षा** – पढ़ाई में सहायता, ऑनलाइन ट्यूशन, भाषा अनुवाद।
2. **स्वास्थ्य** – बीमारी की पहचान, दवा की खोज, डॉक्टरों की मदद।
3. **परिवहन** – ऑटो-ड्राइविंग कारें, स्मार्ट ट्रैफिक सिस्टम।
4. **कृषि** – फसल की निगरानी, मौसम की जानकारी, सही खाद-बिजाई का सुझाव।
5. **बैंकिंग** – धोखाधड़ी रोकना, ऑनलाइन लेन-देन सुरक्षित बनाना।
6. **मनोरंजन** – गाने, फिल्में, गेम्स को व्यक्तिगत रूप से सुझाना।
7. **घरेलू उपयोग** – स्मार्ट स्पीकर, रोबोटिक वैक्यूम क्लीनर।

**PRIMARY TEACHERS' EDUCATION COLLEGE**
Gurwa, PO Sitagarha, Dist. Hazaribag 825 303, Jharkhand, INDIA
(A Christian Minority Institution under the Hazaribag Jesuits Education Society: Estd: 1958)
**Recognized by ERC, NCTE vide order No. BR-E/E- 2/96/2799(12) dt 11.02.1997.**
Mob. 8987903798 (O) 9835358073 (P) Email: info@ptecgurwa.org Website: www.ptecgurwa.org